सिखाने तथा प्रचार करने के लिए सहायता

डेविड रोपर

शांति बहाल करने में कठिनाई

2 शमूएल 20

अबशालोम के विद्रोह के अंत तथा मृत्यु के बाद दाऊद ने यरूशलेम में लौटने की तैयारी करते हुए देश में शांति बहाल करने की इच्छा की। अफसोस, यहूदा के गोत्र को उसे यरूशलेम में वापस लाने में अगुआई करने की उसकी अपील से पुराने घाव हरे हो गए। दस उत्तरी गोत्रों का मानना था कि उन्हें नज़रअन्दाज किया गया है। यहूदा के अगुओं तथा उत्तरी गोत्रों के अगुओं में युद्ध हुए देर नहीं हुई थी।

2 शमूएल 20 के आगे की कहानी बताती है कि शांति बहाल करना कितना कठिन है।

कुछ लोग शांति नहीं चाहते

हालात का लाभ उठाकर,बिन्यामीन के गोत्र से ''शेबा नामक एक ओछे पुरुष'' (20:1क) ने अबशालोम की लिखी किताब से एक पन्ने की नकल करके विद्रोह में अगुआई की। उसकी मांग थी कि ''दाऊद में हमारा कुछ अंश नहीं, और न यिशै के पुत्र में हमारा कोई भाग है; हे इस्राएलियो, अपने अपने डेरे को चले जाओ!'' (2 शमूएल 20:1ख)। इसी भावना का सुलैमान की मृत्यु के बाद राज्य के विभाजन के समय इस्तेमाल होना था (1 राजा 12:16)!

कुछ लोग अतीत को नहीं भुला सकते

आयत 3 उन दस रखेलों के साथ दाऊद के व्यवहार के बारे में बताती है जिन के अबशालोम के साथ शारीरिक सञ्बन्ध थे। हमें तो दाऊद का व्यवहार अनुचित लगता है, और शायद यह था भी, परन्तु हम नहीं जानते कि उस समय इस बात को कैसे समझा गया था। शायद रखेलों को ''अशुद्ध'' माना गया था। शायद उनके साथ ऐसा व्यवहार सबक सिखाने के लिए था। जो भी हो, पूरा मामला अफसोसजनक है और इससे पता चलता है कि किस प्रकार कई बार निर्दोष लोग दूसरों के पापों के कारण कष्ट उठाते हैं।

कुछ लोगों को शांति के बजाय अपनी चिंता होती है

दाऊद के पास खबर पहुंची कि उत्तरी गोत्र शेबा के पीछे लग गए हैं। राजा ने तुरन्त

अपने नये सेनापति अमासा को तीन दिन में यहूदा की सेना एकत्र करने की आज्ञा दी। अमासा ने तय समय में यह काम नहीं किया (सम्भवतया सिपाही उसकी मानने में हिचकिचा रहे थे क्योंकि कुछ सप्ताह पहले ही उसने सेना को दाऊद का विरोध करने की आज्ञा दी थी)। जब अमासा ठहराए हुए समय पर नहीं आया, तो दाऊद घबरा गया। उसने अमासा पर भरोसा रखके उसे नियुक्त किया था; अब वह डर गया कि अमासा फिर उसके विरुद्ध न हो गया हो। दाऊद ने अमासा को ढूंढ़ने के लिए राजा की निजी टुकड़ियों के साथ अबीशै (योआब के खून के प्यासे भाई) को भेजा। योआब, जो गद्दी से उतरने के बाद अभी भी दुखी था, सिपाहियों में शामिल था।

दाऊद के आदमी उजाड़ की ओर कुछ मील ही गए थे कि उन्हें गिबोन के निकट सेना के साथ अमासा मिल गया। योआब ने अपने रिश्ते के भाई अमासा का "हे मेरे भाई, क्या तू कुशल से है?" (20:9) कहकर अभिवादन किया। आगे बढ़ते समय योआब की तलवार म्यान से निकलकर गिर गई। योआब ने उसे उठा कर अमासा के निकट जाते हुए अपने हाथ में लापरवाही से पकड़ ली। क्योंकि यह घटना अचानक घटने जैसी लगी, इसलिए अमासा को कोई शक न हुआ। योआब ने अमासा की दाढ़ी पकड़ी और उसका सिर ऐसे आगे को किया जैसे वह उसके गाल पर चुम्बन लेने वाला हो। चुम्बन के बजाय इस पुराने कठोर योद्धा ने अपना हथियार अमासा के पेट में इतनी ज़ोर से घुसेड़कर घुमा दिया कि उसकी अंतड़ियां निकलकर धरती पर गिर पड़ीं। "अमासा तो सड़क के मध्य अपने लोहू में लोट रहा था" (20:12)।

योआब को फिर उसका पद मिल गया। मैं वहां उपस्थित लोगों का सामना करने के लिए योआब के मुड़ने की कल्पना करता हूं। खून से लथपथ तलवार उठ कर, जैसे कह रही हो, "है कोई और जो अगुआई करने के मेरे अधिकार को चुनौती देना चाहता हो?" उन सिपाहियों में से जिन्हें अमासा ने इकट्ठे किया था, एक ने पुकार कर कहा "जो कोई योआब के पक्ष और दाऊद की ओर का हो वह योआब के पीछे हो ले" (20:11)। योआब और अबीशै, सेना के आगे आगे विद्रोही शेबा को ढूंढ़ने के लिए उजाड़ की ओर चल पड़े। अमासा के कराहने की आवाज़ से जब सेना की चाल धीमी पड़ गई, तो योआब के आदमियों में से एक ने अमासा की देह रास्ते से हटाकर उसे ढक दिया।[1]

कुछ लोग शांति की चाहते हैं, पर उनकी संख्या बहुत कम होती है

सेना शेबा और उसके विद्रोही दल की खोज में उजाड़ की ओर बढ़ गई। उन्होंने उसे पलिश्तीन के उजाड़ में जाकर ढूंढ़ निकाला। शेबा दान के उजाड़ में बेतमाका के आबेल के गढ़ वाले नगर में छुपा हुआ था। योआब के आदमियों ने शहरपनाह के बाहर ईंट और पत्थर का ढेर बना दिया, जिससे वे धक्का मारने पर भीतरी दीवार दब जाए।

जब भीतरी दीवार ढकने लगी, तो दीवार के ऊपर से एक स्त्री बाहर आई, और उसने योआब से बात करनी चाही। उसने अपने नगर को नाश न करने की बिनती की। उसने कहा कि यह नगर अपने बुद्धिमान लोगों के लिए प्रसिद्ध था और एक "प्रधान" नगर था, जिस

पर आस-पास के नगर निर्भर थे। योआब ने जवाब दिया कि वह नगर तो नष्ट नहीं करना चाहता था; उसे को केवल शेबा चाहिए था। कुछ ही देर बाद नगर के लोगों ने दीवार के ऊपर से शेबा का लहू लुहान सिर फैंक दिया।

योआब ने विरोधियों के अंत का ऐलान करने के लिए नरसिंगा फूंका और सब अपने अपने घरों को चले गए। आखिर तामार के बलात्कार से शुरू हुई घटनाओं का अंत हो गया। दाऊद ने अपनी सरकार का पुनर्गठन किया (20:23-26)। स्पष्टतया, देश में फिर से शांति हो गई।

शांति एक भंजनशील वस्तु है

यह दाऊद की मुश्किलों का अंत नहीं था और न ही यह इस्राएल की मुश्किलों का अंत था। दाऊद के घर से उसके लिए नई समस्याएं उत्पन्न हो गईं। योआब फिर सेनापति बन गया था (20:23)। दाऊद ने निर्माण कार्यों को पूरा करने के लिए बेगार पर काम कराने की एक नई प्रथा चलाई, जिसने बाद में इस्राएल के विभाजन में प्रमुख भूमिका निभाई (2 शमूएल 20:24 में "अदोराम" नाम पर ध्यान दें और तुलना करें 1 राजा 12:18)। उत्तर और दक्षिण में तनाव बना रहा, जो वर्षों बाद सुलैमान की मृत्यु के समय फिर से भड़क गया।

शांति बहाली का कार्य है तो कठिन, परन्तु कोशिश करनी बन्द नहीं करनी चाहिए, क्योंकि परमेश्वर शांति चाहता है। हम पढ़ते हैं, "धन्य हैं वे, जो मेल करवाने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे" (मत्ती 5:9; तुलना गलातियों 5:22; याकूब 3:17)।

टिप्पणी

[1]दाऊद ने इस हत्या के लिए योआब को तुरन्त दण्ड नहीं दिया, परन्तु वह इसे भूला नहीं था (1 राजा 2:5, 6)।

परमेश्वर तथा शैतान दोनों एक ही घटना में काम करते हैं?

2 शमूएल 24; 1 इतिहास 21

2 शमूएल 24:1 कहता है, ''और यहोवा का कोप इस्राएलियों पर फिर भड़का, और *उस ने* दाऊद को इनकी हानि के लिए यह कहकर उभारा, कि इस्राएल और यहूदा की गिनती ले।'' ''उस'' का पूर्व पद ''यहोवा का कोप'' है। 1 इतिहास 21:1 की रोशनी में यह सम्भव है कि ''उस'' शैतान के लिए हो, परन्तु ऐसा लगता नहीं है। बाइबल की बात को स्वाभाविक ढंग से लेने का अर्थ है कि ''उस'' का पूर्व पद ''यहोवा'' है। अंग्रेज़ी की बाइबल NKJV में ''He'' कैपिटल करके कोई प्रश्न ही नहीं रहने दिया गया है, बल्कि यह अर्थ मिलता है कि यहोवा ने दाऊद को गणना करने के लिए उभारा।

दूसरी ओर, 1 इतिहास 21:1 कहता है, ''और शैतान [मूलतः, विरोधी] ने इस्राएल के विरुद्ध उठकर, दाऊद को उज़साया कि इस्राएलियों की गिनती ले।'' एक आयत कहती है कि दाऊद से गिनती परमेश्वर ने करवाई जबकि दूसरी कहती है कि शैतान ने करवाई। ज़्या दोनों का आपस में कोई मेल हो सकता है?

उदारवादी विद्वानों का कहना है कि 1 इतिहास लिखे जाने के समय तक थियोलॉजी ने काफ़ी उन्नति कर ली थी, सो गिनती की इस कहानी की नकल किए जाने के समय ''यहोवा'' की जगह ''शैतान'' लिखा गया। जो लोग मौखिक प्रेरणा में विश्वास रखते हैं वे ऐसी प्रकृतिवादी थ्योरियों को नहीं मान सकते।

इसकी व्याज़्या जितनी सरल है उतनी ही जटिल भी। परमेश्वर तथा शैतान *दोनों* ही गिनती करने के दाऊद के निर्णय में शामिल थे। आत्मिक जगत के काम करने के ढंग में समझ रखने के लिए अय्यूब की पुस्तक का इस्तेमाल करते हुए, हम कहेंगे, ''शैतान ने इसे *किया,* परन्तु इसकी *अनुमति* परमेश्वर ने *दी*। '' (याद रखें कि याकूब 1:13 ज़ोर देकर कहता है कि परमेश्वर ''किसी की परीक्षा आप [अर्थात सीधे] नहीं करता है।'') अपनी निशानदेही के लिए अय्यूब के प्रारज़्भिक अध्यायों को ध्यान में रखते हुए, हम कहेंगे, ''शैतान ने यह काम दाऊद और इस्राएल का *नाश करने के लिए* किया, जबकि परमेश्वर

ने दाऊद और इस्राएल की *सहायता करने के लिए* अर्थात उन्हें ताड़ना देने और महत्वपूर्ण सबक सिखाने के लिए (अर्थात उन्हें आत्मिक रूप में बढ़ने में सहायता के लिए) अनुमति दी।'' यह कहकर कि परमेश्वर ने लोगों की गिनती के लिए दाऊद को उभारा, 2 शमूएल का लेखक यह मान रहा था कि परमेश्वर अपने लोगों के जीवनों में *सक्रिय* है।

बाइबल में बहुत से उदाहरणों से पता चलता है कि परमेश्वर तथा शैतान एक ही घटना में कार्य कर रहे होते हैं। मेरे शब्दों पर सावधानीपूर्वक ध्यान दें: वे एक दूसरे का *सहयोग नहीं कर रहे;* बल्कि वे *एक ही घटना में कार्य कर रहे हैं।* उस घटना में कार्य करने के उनके उद्देश्य बिल्कुल अलग हैं। यीशु की परीक्षा दोनों के एक ही घटना में काम करने का एक उदाहरण है। मत्ती 4:1 कहता है, ''तब उस समय *आत्मा* यीशु को जंगल में *ले गया* ताकि *इब्लीस [शैतान] से* उसकी परीक्षा हो।'' क्रूस अच्छा उदाहरण है: शैतान ने यीशु को नाश करने के लिए धार्मिक अगुओं के द्वारा कार्य किया; परमेश्वर ने इसकी अनुमति दे दी क्योंकि यीशु के लिए हमारे पापों के निमित्त मरना आवश्यक था। पौलुस के शरीर में कांटे का उदाहरण हम सब से बात करता है। पौलुस अपनी पीड़ा को ''*शैतान* का दूत'' (2 कुरिन्थियों 12:7) कहता है, परन्तु फिर वह कहता है कि *परमेश्वर* ने इसका इस्तेमाल इसलिए किया कि वह अपनी सामर्थ के बजाय उसकी सामर्थ पर भरोसा रख सके (2 कुरिन्थियों 12:9, 10क)।

हम कह सकते हैं कि जीवन में जो कुछ भी होता है, शैतान उसका इस्तेमाल हमें नाश करने के प्रयास के लिए करेगा, जबकि परमेश्वर उसका इस्तेमाल हमें अच्छे लोग बनाने के यत्न के लिए करेगा। यदि हमारे जीवनों में सब कुछ ठीक ठाक है, तो परमेश्वर हमें आशीष दे रहा है और हमें अच्छे लोग बनाने का यत्न कर रहा है, परन्तु शैतान हमारी सफलता का इस्तेमाल हमें घमण्डी तथा परमेश्वर पर कम निर्भर होने वाले बनाने के प्रयास में करेगा। यदि समस्याएं आती हैं, तो परमेश्वर उनका इस्तेमाल हमें दृढ़ बनाने, सहनशीलता देने के लिए कर सकता है। परन्तु शैतान हम से कहेगा कि परमेश्वर ने हमें भुला दिया है और हमें उसे छोड़ देना चाहिए।

परमेश्वर तथा शैतान एक ही परिस्थिति में कैसे कार्य कर सकते हैं और करते हैं इसकी समझ न केवल 2 शमूएल 24 तथा 1 इतिहास 21 को मिलाने के लिए आवश्यक है, बल्कि हमारे जीवन में होने वाली ''व्यर्थ'' बातों से अर्थ निकालने के लिए भी है।

एक नबी के रूप में दाऊद

नबी के रूप में दाऊद की भूमिका पर विचार किए बिना उसके जीवन का यह अध्ययन अधूरा है।

भजन संहिता की पुस्तक को हम सामान्यतया उपासना की पुस्तक के रूप में देखते हैं परन्तु उस पुस्तक में भविष्यवाणी की आत्मा संचार करती है। जी उठने के बाद जब यीशु अपने चेलों को दिखाई दिया था तो उसने कहा था, "जितनी बातें मूसा की व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं, *भजनों की पुस्तकों* में, मेरे विषय में लिखी हैं,सब पूरी हों" (लूका 24:44)। नये नियम के लेखक तथा वक्ता पुराने नियम की किसी भी पुस्तक से भजनों में से ही उद्धृत करते थे।

शमूएल द्वारा दाऊद का अभिषेक करने के बाद, "भविष्य को यहोवा का आत्मा दाऊद पर बल से उतरता रहा" (1 शमूएल 16:13)। परमेश्वर के आत्मा ने दाऊद के लिए जो बात की वह उसे मंदिर का नक्शा देना था (1 इतिहास 28:19)। हमारी दिलचस्पी का तथ्य यह है कि भजन लिखने के लिए आत्मा ने दाऊद को प्रेरणा दी थी। "दाऊद के अंतिम वचन" इस प्रकार आरम्भ होते हैं:

उस पुरुष की वाणी ... जो ऊंचे पर खड़ा किया गया
और याकूब के परमेश्वर का अभिषिक्त,
और इस्राएल का मधुर भजन गाने वाला है:
यहोवा का आत्मा मुझ में होकर बोला,
और उसी का वचन मेरे मुंह में आया (2 शमूएल 23:1, 2)।

दाऊद को सम्भवत: अपने कथनों के पूरे अर्थ मालूम नहीं थे। दाऊद के भजन जीवन के उन हालात में से निकले, जिनमें दाऊद था और उनसे उसमें भावनाएं पैदा हुईं। सम्भवत: उसे इस बात का एहसास नहीं था कि आने वाला मसीहा कैसा था या उसके कितने कथन मसीह के जीवन में *पूरा* होने थे।

नये नियम के बहुत से पद दाऊद को परमेश्वर के वक्ता के रूप में बताते हैं। यहूदा के स्थान पर किसी और को नियुक्त करने के समय, पतरस ने यह कहते हुए कि, "हे भाइयो, अवश्य था कि पवित्र शास्त्र का वह लेख पूरा हो, *जो पवित्र आत्मा ने दाऊद के मुख से* यहूदा के विषय में ... कही थी" (प्रेरितों 1:16) भजन संहिता 69 और 109 से उद्धृत किया। सुसमाचार के पहली बार सुनाए जाने के समय पतरस ने भजन संहिता 16 से उद्धृत

करते हुए कहा था, "*सो भविष्यवक्ता होकर* और यह जानकर कि परमेश्वर ने मुझ से शपथ खाई है, कि मैं तेरे वंश में से एक व्यक्ति को तेरे सिंहासन पर बिठाऊंगा, *[दाऊद]* ने होनहार को पहले ही से देखकर मसीह के जी उठने के विषय में भविष्यवाणी की" (प्रेरितों 2:30, 31)। प्रेरितों के काम 4 अध्याय में, प्रेरितों ने परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए भजन संहिता 2 से उद्धृत किया और कहा कि "पवित्र आत्मा के द्वारा *अपने सेवक हमारे पिता दाऊद के मुख से* कहा, कि अन्य जातियों ने हुल्लड़ क्यों मचाया? और देश के लोगों ने क्यों व्यर्थ बातें सोचीं?" (आयत 25)। इब्रानियों के लेखक ने अपने पाठकों से तुरन्त उज़्र देने को प्रोत्साहित करने की इच्छा से भजन संहिता 95 से उद्धृत करते हुए कहा, "फिर वह [अर्थात परमेश्वर] किसी विशेष दिन को ठहराकर इतने दिन के बाद दाऊद की पुस्तक में उसे अ०कया गया है। कुछ मामलों में, नये नियम का हवाला प्रत्यक्ष तौर पर पूरा होने की बात करता है। कुछ मामलों में, नये नियम में घटी घटना भजनों का समानान्तर ही है। कुछ मामलों में, भजन की भष का इस्तेमाल इसकी उपयुक्तता के कारण किया गया है।

यह विचार करते हुए कि परमेश्वर किस प्रकार दाऊद के जीवन में कार्य करता था, इस महत्वपूर्ण कार्य को न भूलें कि वह एक *नबी* था!

आप यहां क्यों हैं? (भजन संहिता से एक उपासना)

''पवित्र, पवित्र, पवित्र'' जैसा आराधना में गाया जाने वाला कोई गीत।
प्रारम्भिक प्रार्थना।

परिचय

भजन संहिता की पुस्तक को आराधना से अलग नहीं किया जा सकता। बहुत से भजन तो सार्वजनिक तथा निजी उपासनाओं में इस्तेमाल के लिए लिखे गए थे। भजन संहिता की पुस्तक को यहूदियों की भजनावली के रूप में माना जा सकता है। स्पष्टतया, कुछ भजन प्रारम्भिक मसीहियों (इफिसियों 5:19; कुलुस्सियों 3:16; 1 कुरिन्थियों 14:26) द्वारा गाए जाते थे और उनमें से कुछ गीत आज हम भी गाते हैं (भ.सं. 19, 23 और अन्य गीत भजनों की हमारी पुस्तक के गीतों का आधार हैं)। इस उपासना का आरम्भ करते हुए,[1] हम भजन संहिता की पुस्तक से स्तुति के एक-दो गीत गाएंगे :फिर हम आराधना पर एक सबक के लिए भजन संहिता की पुस्तक में से देखेंगे।

भजन संहिता में से महिमा के (का) गीत।

कुछ लोग धन्यवाद देने के लिए आराधना करने आते हैं

भजन संहिता की पुस्तक में जाकर, एक बात जो हमें चौंका देती है, वह भावनाओं की व्यापक तौर पर अभिव्यक्ति है। परमेश्वर के पास जाने के मनुष्य के कई कारण हैं। आराधना में कई तरह की भावनाएं रहती हैं।

कलीसिया में हम एक चरम तक ऊंचा जाना चाहते हैं। जब मैं लड़का था तो हमें बताया जाता था कि आराधना में जाना जनाजे में जाने की तरह हैं (''यहां मसीह की देह है [प्रभु भोज में]'')। इसलिए मुझे सिखाया जाता था कि हमें बड़े अच्छे कपड़े पहन कर बड़ी शांति से बैठना चाहिए। आज हम प्रायः सुनते हैं कि आराधना एक जश्न है और इसमें

प्रसन्न (और शायद शोरगुल भरे भी) रहना चाहिए। परन्तु तथ्य यह है कि आराधना में आने वाला हर व्यक्ति चिल्लाने जैसा (जैसे जनाजे पर हो) और हर व्यक्ति हंसने जैसा (जैसे किसी जश्न में हो) महसूस नहीं करता। बहुत से लोग प्रभु की उपस्थिति में अपने मन की बातें लेकर आते हैं। आराधना करने के इन वाजिब कारणों को समझा जाना और हमारी आराधना सभाओं में होना।

उदाहरण के लिए, कुछ लोग आराधना में परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिए आते हैं। भजन संहिता 103 एक अच्छा उदाहरण है। भजन संहिता 103 पूर्णतया धन्यवाद का भजन है। भजन लिखने वाला परमेश्वर से कुछ मांग नहीं रहा था। बल्कि वह "बहुत सी आशीषों को गिन रहा" था। यह भजन तीन प्रकार की आशीषों के लिए प्रभु को "धन्यवाद" कहता है: (1) निजी तौर पर दी गई परमेश्वर की आशीषें, (2) अपने लोगों की दी गई परमेश्वर की आशीषें, (3) सब लोगों को दी गई परमेश्वर की आशीषें। *सब* लोगों से परमेश्वर की महिमा करने का आग्रह किया गया है। यह जश्न है!

बाइबल पाठ: भजन संहिता 103:1-14.
धन्यवाद का गीत, जैसे "ज़िंदगी में जब तुम पर हो सख़्त तूफान (गिनो सारी बरकत)" या "परम पिता की हम स्तुति गाएं।"

कुछ लोग क्षमा पाने के लिए आराधना करने आते हैं

सब लोग अपनी बरकतों को गिनने या जश्न मनाने के लिए ही नहीं आते। उनके आने के और भी कारण होते हैं। कुछ लोग क्षमा मांगने के लिए आते हैं, जैसे दाऊद भजन 51 में आया था। उन्होंने पाप किया होता है और अपने पाप का बोध उन्हें परेशान करता रहता है। उन्हें पता होना चाहिए कि परमेश्वर उन्हें फिर से ग्रहण कर लेगा। उन्हें पता होना चाहिए कि वे *कैसे* लौट सकते हैं।

भजन संहिता 51 दाऊद को नातान के यह कहने के बाद लिखा गया था कि, "तू ही वह मनुष्य है!" (2 शमूएल 12:7)। इस भजन में दाऊद (1) क्षमा के लिए, (2) बहाली के लिए (अर्थात, परमेश्वर के साथ सही संबंध बहाल करने के लिए), और (3) आराधना में स्वीकार्य होने के लिए कह रहा था।

बाइबल पाठ: भजन संहिता 51:1-3, 9-12.
यीशु के लहू के द्वारा क्षमा पर गीत, जैसे "हट गया, हट गया, मेरे सब गुनाह का बोझ हट गया" या "यीशु का लहू जो जारी।"

कुछ लोग आराधना करने इसलिए आते हैं क्योंकि वे निराशा में होते हैं

आराधना करने के लिए आने वाले कुछ लोग निराशा में होते हैं। कई भजनों में

समस्याओं के हमें घेर लेने पर हमारे संघर्षों का चित्रण मिलता है, भजन संहिता 42 और 43 इसका उदाहरण हैं। भजन 42 और 43 इकट्ठे हैं। दोनों को एक साथ देखकर, हम भजन लिखने वाले की निराशा को तीन प्रकार से व्यज़्त करने की बात देखते हैं: (1) वह *निराश* है ज़्योंकि उसे लगता है कि परमेश्वर बहुत दूर है। (2) वह *उदास* है ज़्योंकि उसके जीवन में समस्याएं ही समस्याएं हैं। (3) वह *असहाय* महसूस करता है ज़्योंकि शत्रुओं ने उसके विरुद्ध झूठे आरोप लगाए हैं परन्तु वह यह साबित नहीं कर सकता कि वे आरोप झूठे हैं। आइए निराशा की लेखक की भावनाओं से जुड़ी कुछ आयतों को पढ़ते हैं।

बाइबल पाठ: भ.सं. 42:1-5.
प्रोत्साहन देने का गीत, जैसे ''प्यारो हिज़्मत बांधो।''
प्रार्थना।

कुछ लोग आराधना में इसलिए आते है ज़्योंकि वे उदास होते हैं

कुछ लोग, जो आराधना में आते हैं वे उदास और शोकित मन होते हैं, जैसे भजन 22 में दिखाया गया है। यह महान भजन यीशु के क्रूस को हमारे मनों में बुलाता है, परन्तु मूलत: यह भजन लिखने वाले के परमेश्वर के पास अपनी घबराहट को खोलने से सज़्बन्धित था। भजन का आरज़्भ परमेश्वर द्वारा ठुकराए गए व्यज़्ति की भावना से होता है; लेखक बीमारी से परेशान था और उसके विरोधी उस पर दबाव बनाए हुए थे। परन्तु, भजन का अंतिम भाग *विजय* का ही है। व्यवहार में परिवर्तन कैसे हुआ ? शायद लेखक ने एक संदेश सुना, जिससे उसे परमेश्वर की वफादारी तथा प्रेम याद आ गया। मुझे आशा है कि हमारी आराधना सभाओं से सहानुभूति तथा प्रोत्साहन दोनों मिल सकते हैं, और इससे आने वालों के मनों को शांति मिल सकती है।

बाइबल पाठ: भजन संहिता 22:1, 6-8, 14, 15, 22.
परमेश्वर/यीशु के हमारी सहायता करने का गीत जब हम उदास होते हैं, जैसे ''मुबारक नौबत दुआ की।''

कुछ लोग आराधना में आते हैं ज़्योंकि वे अकेले होते हैं

आराधना में आने वाले कुछ लोग अकेला महसूस कर रहे होते हैं। दाऊद ने एक बार लिखा था, ''कोई मुझे नहीं देखता है'' (भजन संहिता 142:4)। अपनी उपासना के लिए हम भजन 88 को देखेंगे। यह भजन, भजन संहिता 22 के पहले भाग में वर्णित परिस्थिति जैसी स्थिति के लिए लिखा गया था; परन्तु इस बार लेखक को निराश करने वाले उसके *मित्र और परिवार* के लोग ही थे। कुछ बातें तनहाई से भी बुरी होती हैं! हमारी आराधना सभाएं परमेश्वर तथा मसीह में हमारी संगति की व्यावहारिक अभिव्यज़्ति होनी चाहिए।

बाइबल पाठ: भ.सं. 88:1, 2, 8, 14-18.
परमेश्वर/यीशु के हमारी सहायता करने पर गीत जब कोई हमारी परवाह नहीं करता।

कुछ लोग आराधना के लिए इसलिए आते हैं क्योंकि वे कड़वाहट से संघर्ष कर रहे होते हैं

अंत में, कुछ लोग तो आराधना में इसलिए आते हैं कि वे शायद अपने मनों में बदला लेने की कड़वाहट से जूझ रहे होते हैं, कई भजन इस विषय पर रोशनी डालते हैं (जिन्हें "शापात्मक" भजनों की श्रेणी में रखा जाता है)। आइए इस प्रकार के भजन के एक उदाहरण, भजन संहिता 58 पर विचार करते हैं। आप "हे परमेश्वर,उनके मुंह में से दांतों को तोड़ दे" (आयत 6) जैसे शज़्दों को देखकर चौक जाएंगे! समय इन *कठिन* भजनों पर लंबी चर्चा करने की अनुमति नहीं देता, परन्तु एक बात ध्यान में रखी जानी आवश्यक है कि लेखक स्वयं बदला नहीं ले रहे थे बल्कि बदला लेने की अनुमति परमेश्वर को दे रहे थे। हम में से हर एक को सब बातें परमेश्वर के हाथ में देने के लिए सीखने की आवश्यकता है। जिसमें कहा है, "पलटा लेना *मेरा* काम है, ... *मैं* ही बदला लूंगा" (रोमियों 12:19)। हमारी आराधनाएं इस बात की पुष्टि करती होनी चाहिए कि नियन्त्रण *परमेश्वर* के हाथ में है।

बाइबल पाठ: भ.सं. 58:3-6.
परमेश्वर के हाथ में छोड़ने पर गीत, जैसे "यीशु को मैं सब कुछ देता" या " 'तेरा हूं ऐ रब।"

सारांश

हम देख चुके हैं कि आराधना में आने के लोगों के कई कारण होते हैं: धन्यवाद देने के लिए, क्षमा ढूंढ़ने के लिए, निराश होना, दुखी होना, अकेले होना, कड़वाहट से संघर्ष। आराधना सभा में जाने की योजना बनाते समय हमें इन *सब* बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है। हमारी आराधना में हद से बाहर जाने से बचने की आवश्यकता है।

मेरी आशा है कि यह संक्षिप्त समीक्षा आराधना के बारे में ज़जनों की पुस्तक से सीखने के महत्व को समझा पाई है। आराधना पर मेरा पसंदीदा भजन, भजन संहिता 84 है। लेखक को यरूशलेम से जाना पड़ा था और वह वापस आने को तरसता था। इस भजन में उसने (1) फिर से परमेश्वर की उपस्थिति में होने की तड़प, (2) आराधना से मिलने वाले आनंद की इच्छा, (3) ऐसे अनुभव से मिलने वाली सामर्थ की तड़प व्यज़्त की है। भजन संहिता की पुस्तक में से आराधना पर सीखा जाने वाला सबसे महत्वपूर्ण सबक परमेश्वर के पास आने पर *व्यवहार* का ढंग है। भजन संहिता 84 से कुछ आयतें पढ़ें। ध्यान से सुनें कि भजन लेखक कितनी गंभीरता से आराधना करना चाहता था।

बाइबल पाठ: भ.सं. 84:2, 4, 9-12.

आराधना समाप्त करने के लिए परमेश्वर तथा आराधना पर गीत है, जैसे ''पावन है वो प्रभु हमारा'' या ''................ ।''

ज़्या आप परमेश्वर की आराधना करने को तैयार हैं? यदि उसकी नजर में आपका जीवन सही नहीं है तो आप तैयार नहीं हैं।

प्रारज़्भ करने के लिए गीत।
समाप्ति का गीत।[2]
अंतिम प्रार्थना।

टिप्पणियां

[1]आराधना के लिए यह पाठ रविवार को शाम की आराधना के लिए तैयार किया गया था। रविवार प्रात: की आरधना के लिए, इसमें प्रभु भोज शामिल करके इसे बदला जाए। [2]उस स्थानीय मंडली में जहां यह पाठ इस्तेमाल हुआ था, जिन्होंने प्रभु भोजन नहीं लिया था उन्हें इस गीत के दौरान एक अलग कमरे में जाने के लिए कहा गया, जहां वे प्रभु भोज ले सकते थे।